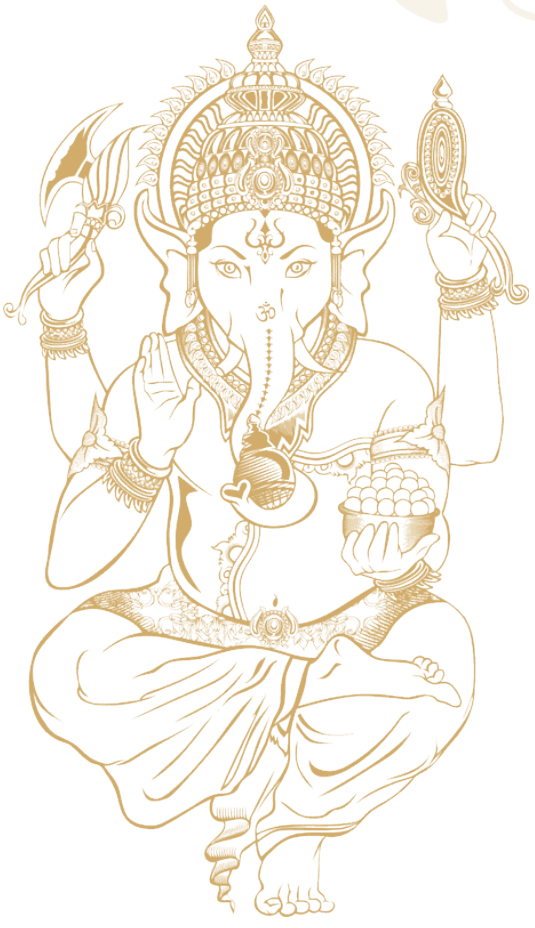

BABY NITESH BALTOO GHUNSA

02 Mar 2026

12:09 PM

Simla

Model: Baby-Horoscope **Order No: 121471301**

तिथि 02/03/2026 **समय** 12:09:00 **वार** सोमवार **स्थान** Simla **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:13:29
अक्षांश 31:06:00 उत्तर **रेखांश** 77:10:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:21:20 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	22:27:57 घं
वेलान्तर	00:12:09 घं
सूर्योदय	06:47:24 घं
सूर्यास्त	18:20:02 घं
चैत्रादि संवत	2082
शक संवत	1947
मास	फाल्गुन
पक्ष	शुक्ल
तिथि	14
नक्षत्र	मघा
योग	अतिगण्ड
करण	वणिज

अवकहड़ा चक्र

गण	राक्षस
योनि	मूषक
नाड़ी	अन्त्य
वर्ण	क्षत्रिय
वश्य	वनचर
वर्ग	मूषक
युँजा	मध्य
हंसक	अग्नि
जन्म नामाक्षर	मा-माणिक
पाया(रा.-न.)	लौह-रजत
होरा	शुक्र
चौघड़िया	रोग

विंशोत्तरी
केतु 5वर्ष 8मा 19दि

केतु

02/03/2026
21/11/2031

	02/03/2026
शुक्र	18/06/2026
सूर्य	24/10/2026
चन्द्र	25/05/2027
मंगल	21/10/2027
राहु	08/11/2028
गुरु	15/10/2029
शनि	23/11/2030
बुध	21/11/2031

योगिनी
भद्रिका 4वर्ष 1मा 1दि

भद्रिका

02/03/2026
03/04/2030

	02/03/2026
उल्का	12/10/2026
सिद्धा	02/10/2027
संकटा	11/11/2028
मंगला	01/01/2029
पिंगला	13/04/2029
धान्या	12/09/2029
भ्रामरी	03/04/2030

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			28:25:44	वृष	मृगशिरा	2	मंगल	शनि	---	0:00			
सूर्य			17:27:47	कुंभ	शतभिषा	4	राहु	सूर्य	शत्रु राशि	1.63	भ्रातृ	पितृ	साधक
चंद्र			02:26:09	सिंह	मघा	1	केतु	शुक्र	मित्र राशि	1.09	ज्ञाति	मातृ	जन्म
मंगल		अ	05:31:32	कुंभ	धनिष्ठा	4	मंगल	सूर्य	सम राशि	1.31	पुत्र	भ्रातृ	प्रत्यारि
बुध	व	अ	27:05:11	कुंभ	पू०भाद्रपद	3	गुरु	शुक्र	सम राशि	1.02	आत्मा	ज्ञाति	वध
गुरु	व		20:59:29	मिथु	पुनर्वसु	1	गुरु	गुरु	शत्रु राशि	1.39	अमात्य	धन	वध
शुक्र			00:34:54	मीन	पू०भाद्रपद	4	गुरु	मंगल	उच्च राशि	1.51	कलत्र	कलत्र	वध
शनि			07:39:08	मीन	उ०भाद्रपद	2	शनि	केतु	सम राशि	0.95	मातृ	आयु	मित्र
राहु			14:45:29	कुंभ	शतभिषा	3	राहु	केतु	मित्र राशि		---	ज्ञान	साधक
केतु			14:45:29	सिंह	पू०फाल्गुनी	1	शुक्र	शुक्र	शत्रु राशि		---	मोक्ष	सम्पत

लग्न-चलित

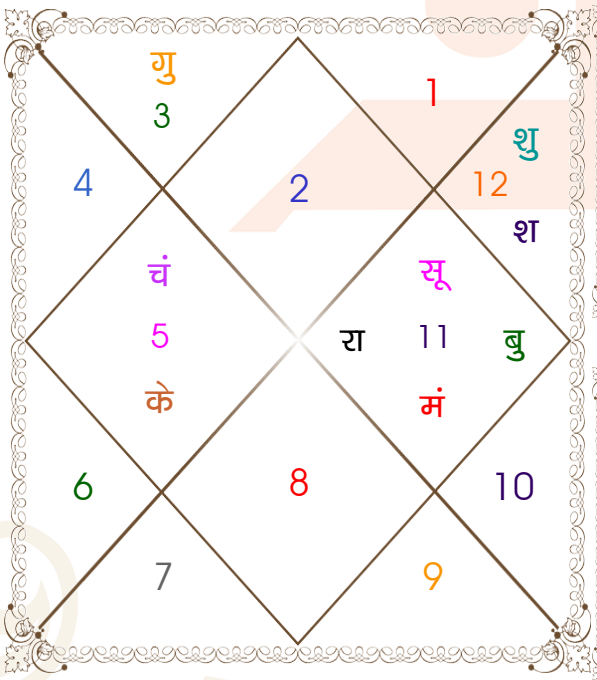

चन्द्र कुंडली

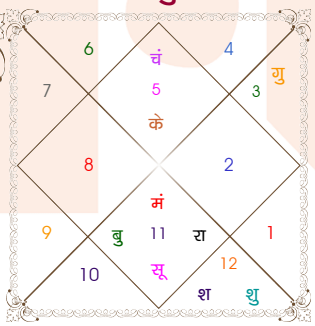

नवमांश कुंडली

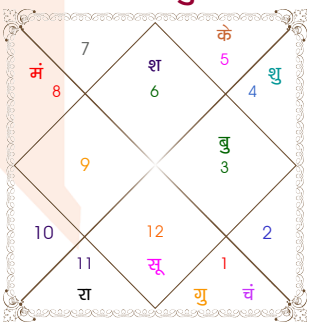

सर्वाष्टकवर्ग

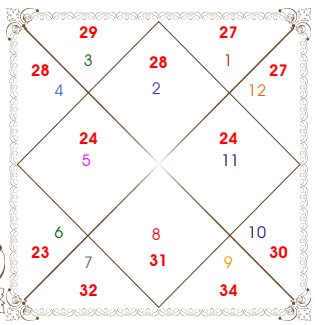

दशमांश कुंडली

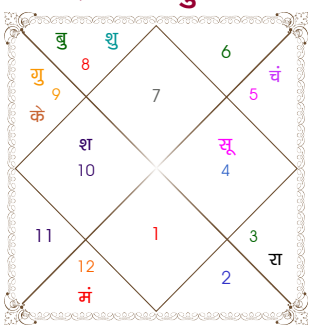

नक्षत्रफल

आपका जन्म मघा नक्षत्र के प्रथम चरण में हुआ हैं। अतः आपकी जन्म राशि सिंह तथा राशि स्वामी सूर्य हैं। नक्षत्र के अनुसार आपका वर्ण क्षत्रिय, नाड़ी अन्त्य, योनि मूषक, वर्ग मूषक तथा गण राक्षस होगा। नक्षत्र के चरणानुसार आपका जन्म नाम "म" अक्षर से प्रारम्भ होगा। यथा महेश, मनोज।

आपका जन्म गण्डमूल नक्षत्र में हुआ हैं। इसके प्रथम चरण में उत्पन्न होने के कारण जातक माता तथा भातृपक्ष के लिए कष्ट कारी होता है। अतः जन्म समय में ही इस नक्षत्र की शास्त्रीय विधि विधान से किसी योग्य विद्वान द्वारा शान्ति करा लेनी चाहिए। इससे अशुभ प्रभाव समाप्त हो जाएगा। इसके लिए नक्षत्र के कम से कम 28 हजार जप करने चाहिए तथा 28वें दिन जब यह नक्षत्र पुनः आवें तो इसके दशांश का हवन करना चाहिए।

ऊँ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः।
पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः।
प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः।
अक्षन्नपितरो ळमीमवन्तः पितरोडतृप्यन्त पितरः शुन्धध्यम्।।
जातक परिजातः

आप अपने जीवन काल में धन से सदैव परिपूर्ण दौरान आपकी- पास सेवक आपकी सेवा के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे। आप सामाजिक सुख एवं सांसारिक ऐश्वर्य का आनन्द पूर्वक उपभोग करेंगे एवं देवताओं तथा अपने माता पिता के परम प्रिय भक्त होंगे। इसके अतिरिक्त आप एक उद्योगी पुरूष भी होंगे।

बहुभृत्यः धनो भोगी सुरपितृभक्तो महोद्यमः पित्रे।
बृहज्जातकम्

अर्थात् मघा नक्षत्र में उत्पन्न जातक धनवान, बहुत से नौकरों को रखने वाला, भोगैश्वर्य से सम्पन्न, माता पिता तथा देवताओं का भक्त एवं उद्योगी पुरूष होता है।

आप अपने माता पिता तथा पितामह के प्रति गहन श्रद्धा का भाव रखेंगे। तथा यत्न पूर्वक इनकी सेवा में तल्लीन रहेंगे। आपके अधिकांश कार्य साहसिक होंगे। तथा सेना या पुलिस में किसी उच्च पद को सुशोभित करने में सफलता प्राप्त करेंगे। साथ ही आप सरकार की सेवा के लिए भी योग्य समझे जाएंगे तथा इसका आपको निश्चय ही अवसर प्राप्त होगा।

बहुभृत्यो धनी भोगी पितृभक्तो महोद्यमी।
चमूनाथा राजसेवी मघायां जायते नरः।।
मानसागरी

अर्थात् मघा में उत्पन्न जातक अधिक नौकरों वाला, धनवान, भोगी, पितृभक्त,

महान उद्यमी, सेनापति तथा राजा की सेवा में तत्पर रहता है।

पल पल में आप रूप बदलने में भी अति चतुर होंगे। आप उत्सवों के प्रिय होंगे तथा स्वयं उत्सवों के आयोजनों में पूर्ण रूप से भाग लेकर उसे सफल बनाने में यत्न पूर्वक कर्म करेंगे। आप जनता पर शासन करने वाले उच्चाधिकारी भी हो सकते हैं।

बहुरूपो धनीभोगी पितृभक्तो महोत्सवी।
नरनाथो राजसेवी मघायां जायते नरः।।
जातकदीपिका

अर्थात् मघा में उत्पन्न जातक बहूरूपी, धनवान, ऐश्वर्य सम्पन्न, माता पिता का भक्त महान उत्सवी, मनुष्यों का स्वामी तथा राजा की सेवा करने वाला होता है।

आपके हृदय में दया एवं करूणा के भाव अल्प मात्रा में रहेगा। आपका स्वभाव भी उग्र रहेगा तथा यत्न पूर्वक आप अच्छे कार्यो को ही सश्रमपन्न करेंगे। आप एक बुद्धिमान पुरूष होंगे तथा स्वबुद्धिबल से समाज में अपना प्रभाव स्थापित करने में सफल रहेंगे। शत्रु को पराजित करना आपके लिए अत्यन्त सुगम कार्य होगा। कभी कभी आप अपने किए हुए कार्यो पर गर्व भी करेंगे। तथा हमेशा पुण्य तथा सत्कार्यो को करने में प्रयत्न शील रहेंगे। आप स्त्री के पूर्ण रूप से वश में रहेंगे एवं समाज में आपको यथोचित मात्रा में पूर्ण मान सम्मान आदर तथा सहयोग प्राप्त होता रहेगा।

कठोरचित्तः पितृभक्तियुक्तस्तीव्र स्वभावस्त्वनवद्यविद्यः।
चेजन्मभं यस्य मघा नघः सन्मति सदाराति विघातदक्षः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् मघा नक्षत्र का जातक कठोर हृदय वाला पिता का भक्त, तीव्र स्वभाव वाला, विद्यावान, पाप रहित, बुद्धिमान एवं शत्रु को जीतने वाला होता है।

आपका जन्म लौहपाद में हुआ है। यद्यपि लौह पाद में उत्पन्न जातक प्रायः धन के अभाव से दुःखी सुखसंसाधनों से हीन तथा अन्य प्रकार से जीवन में कष्ट प्राप्त करता है। परन्तु आपकी कुण्डली में चन्द्रमा शुभराशि में स्थित है। अतः आप अपने जीवन काल में जल से उत्पन्न होने वाले पदार्थो से नित्य लाभार्जन करते रहेंगे। आप एक धनवान पुरूष होंगे तथा अन्य चल अचल सम्पतियों के भी स्वामी बनेंगे। आप हमेशा नवीन वस्त्रों से युक्त रहेंगे एवं जीवन में वाहन आदि के सुख को प्राप्त करेंगे। साथ ही सुयोग्य संतति से भी आप युक्त रहेंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा का भाव रहेगा तथा बन्धु एवं मित्रों से आपके संबंध अत्यन्त ही मधुर रहेंगे एवं उनसे आपको यथोचित सहयोग प्राप्त होता रहेगा। जीवन में आवश्यक भौतिक सुखसंसाधनो से आप प्रायः सुसम्पन्न रहेंगे। साथ ही दानशीलता का भाव भी आपके मन में विद्यमान रहेगा। जल क्रीडा के आप शौकीन होंगे तथा इससे हार्दिक प्रसन्नता प्राप्त करेंगे।

सिहं राशि में उत्पन्न होने के कारण आपका स्वभाव उग्र तथा तेजस्वी होगा। आपका मस्तक तथा मुखमंडल भी विस्तृताकार होगा। आपकी आँखे छोटी तथा पीत वर्ण की होंगी। पहाड़ों तथा जंगलों में भ्रमण करना आपको प्रिय लगेगा। साथ ही आपकी मांस भक्षण में विशेष रूचि हो सकती है। कभी कभी आप अकारण ही क्रोधावस्था को प्राप्त होंगे। जीवन में आप यदा कदा मानसिक चिन्ताओं से भी चिन्तित रहेंगे। आपकी प्रवृति दान शीलता से युक्त होगी। तथा दान देना आपका प्रिय कर्तव्य होगा यदा कदा आप अभिमानी प्रवृति का भी प्रर्दशन करेंगे। आप अपने माता पिता के परम प्रिय भक्त तथा सेवा सुश्रूषा करने वाले व्यक्ति होंगे। साथ ही आपकी सन्तान संख्या में पुत्रों की संख्या अल्प होगी। आपकी बुद्धि स्थिर होगी तथा चंचलता का उसमें सर्वथा अभाव रहेगा।

तीक्ष्णः स्थूलहनुविशालवदनः पिङ्गेक्षणोळल्पात्मजः।
स्त्रीद्वेषी प्रियमासकाननग कुप्यत्यकार्ये चिरम्।।
क्षुतृष्णोदरदन्तमानसरुजा सम्पीडितस्त्यागवान।
विक्रान्तः स्थिरधीः सुगर्वितमनामातुर्विधेयो योळर्कभे।।
बृहज्जातकम्

आपके शरीर की अस्थियां अत्यन्त ही पुष्ट होंगी तथा बाल भी अल्प मात्रा में ही रहेंगे। स्वभाव से आप उग्र रहेंगे। यदा कदा दन्त रोगों से भी आप कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे। आप कार्यारम्भ से पहले कुछ न कुछ आवाज या स्वर अवश्य निकालेंगे। आपका वक्षस्थल विशाल, विस्तृत तथा दर्शनीय होगा साथ ही समस्त सामाजिक तथा अन्यजन आपके प्रभुत्व को हार्दिक रूप से स्वीकार करेंगे। आप अत्यन्त सजग तथा जागृत रहेंगे तथा कार्य आरम्भ से पहले चारों तरफ स्थितियों का पूर्ण निरीक्षण करेंगे।

स्थूलास्थिर्मन्दरोमा पृथुवदनगलो ह्रस्वपिङ्गाक्षियुग्मः।
स्त्रीद्वेषी क्षुत्पिपासा जठररुदरजपीडितो मांसभक्षः।।
दातातीक्ष्णोळल्पपुत्रो विपिननगरतिमातृवश्य सुवक्षा।
विक्रान्तः कार्यालापी शशभृतिरविभे सर्वगम्भीर दृष्टिः।।
सारावली

आपका हनुभाग दृढ तथा मोटा होगा। साथ ही मुख आकृति भी विशालता से युक्त रहेगी। माता के आप परमप्रिय रहेंगे तथा आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा तथा सम्मान का भाव रखेंगे।

पिङ्गेक्षणः स्थूलहनुर्विशालवक्त्रोळभिमानी सपराक्रमः।
कुप्यत्कार्ये वनशैलगामी मातुर्विधेयः स्थिरधीः मृगेन्द्रेण।।
फलदीपिका

आप अपने उदर पोषण के योग्य धनार्जन से ही सन्तुष्टि एवं प्रसन्नता की अनुभूति करने वाले होंगे। तथा आपका स्वभाव प्रारम्भ से ही क्रोध युक्त रहेगा। पहाड़ों या जंगलों में भ्रमण के प्रति आपके मन में विशेष उत्सुकता व्याप्त रहेगी। साथ ही आप सेवक तथा बन्धुओं

की संख्या अल्प रहेगी। इसके अतिरिक्त आप विशाल वक्षस्थल के स्वामी होंगे

उदरभरणतुष्टः क्रोधनो मांसलुब्धो।
गहनगुरुगुहानां सेवको बंधुहीनः।।
कपिलनयन भग्नस्तुङ्गवक्षाः क्षुधार्तो।
विपुल सुरतसेवी सिंह राशि भे मनुष्यः।।
जातकदीपिका

आप स्वभाव से ही क्षमाशील पुरूष होंगे। तथा दण्ड की अपेक्षा क्षमा करना श्रेयस्कर समझेंगे। आप व्यर्थ समय नष्ट नहीं करेंगे। अपितु कुछ न कुछ कार्य करने में हमेशा तत्पर रहेंगे। आप नित्य देश विदेशों में भ्रमण करने में भी व्यस्त रहेंगे। शीत से आप अधिक भयभीत रहेंगे। आपके सभी मित्र अच्छे तथा गुणवान होंगे। साथ ही सामाजिक जनों से आपका व्यवहार विनयशील रहेगा जिससे सभी लोग आपका सम्मान करेंगे। माता पिता से आपका विशिष्ट अनुराग रहेगा जिसे आप पूर्ण जीवन निर्वाह करेंगे। साथ ही आप में कई व्यसन या बुरी आदतें भी होंगी लेकिन समाज में पूर्ण रूप से प्रख्यात तथा यशस्वी रहेंगे।

यदा कदा आपके द्वारा घर में कुछ न कुछ कलह या वाद विवाद अवश्य होता रहेगा क्योंकि आपकी प्रवृति में उग्रता रहेगी। तथा अन्य जनों की बात से आप शीघ्र ही सहमत भी कम ही होंगे। अतः पारिवारिक तथा सामाजिक जनों से सामंजस्य स्थापित करने के लिए आपको प्रयत्नशील रहना चाहिए।

अचल काननयानमनोरथं गृहकलित्रच गलोदरपीडनम्।
द्विजपतिमृर्गराजगतो नृणांवितनुते तनुतेजविहीनताम्।।
जातकाभरणम्

आपकी आँखें तथा शारीरिक गठन सुन्दर एवं दर्शनीय होगे जिसे देखकर कोई भी आकर्षित हो सकेगा। आप गम्भीर दृष्टि वाले पुरूष होंगे तथा गम्भीरता से अवलोकन करने के बाद ही आप कार्यारम्भ करेंगे तथा सम्पूर्ण जीवन को सुख से बिताने में आप सफल सिद्ध होंगे।

सिंहस्थे पृथुलोचनः सुबदनो गम्भीरदृष्टिः सुखी।।
जातक परिजातः

राक्षस गण में उत्पन्न होने के कारण आप कभी कभी व्यर्थ बोलने वाले होंगे। आपका हृदय दया तथा करूणा का भाव भी अल्प रहेगा। आपके समस्त कार्य साहस से सम्पन्न होंगे। आपके मन में साहसिक कार्यों को सम्पन्न करने की प्रबल इच्छा सदैव विद्यमान रहेगी। आप छोटी छोटी बातों पर शीघ्र ही क्रोधित हो जाएंगे तथा अपनी कार्य सिद्धि के लिए किसी भी कार्य को करने के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे। आपकी प्रवृति वाद विवाद की भी होगी। फलतः अन्य लोंगो से आपका वैमनस्य का भाव रहेगा। अतः संयम पूर्वक अन्य लोगों से व्यवहार रखना चाहिए।

आप उन्माद तथा प्रमेह रोग से भी पीड़ित हो सकते हैं। साथ ही आपका मुख भी

दीर्घाकार होगा। आप कठोर वचनों का कभी कभी अपने भाषण में प्रयोग करेंगे जिससे सुनने वाले अप्रसन्न रहेंगे। अतः मधुर शब्दों का आपको अपने संभाषण में उपयोग करना चाहिए।

अनल्पजल्पश्च कठोरचित्तः स्यात्साहसी क्रोधपरोद्धतश्च।
दुःशीलवृतः कलीकृत्वलीमान रक्षोगणोत्पन्नरो विरोधी।।
जातकभरणम्

अर्थात् राक्षस गण में उत्पन्न जातक व्यर्थ बोलने वाला, कठोर, साहसी, अकारण ही क्रोधित होने वाला, नीच प्रकृति से युक्त, झगड़ू, बलवान तथा अन्य लोगों का विरोधी होता है।

मूषक योनि में उत्पन्न होने के कारण आप एक बुद्धिमान पुरूष होंगे। तथा अपने कार्यों को करने में हमेशा तत्पर रहेंगे। किसी भी कार्य को करने या परिश्रम करने में आप सक्रिय रहेंगे तथा इसमें किसी भी प्रकार का प्रमाद या आलस्य नहीं करेंगे। आप एक सौम्य तथा भद्र पुरूष होंगे तथा अभिमान की भावना का आपमें सर्वथा अभाव रहेगा। फलतः समाज से पूर्ण सम्मान तथा सहयोग प्राप्त होगा। आपके स्वभाव की विशेषता यह होगी कि आप किसी पर भी विश्वास कम ही करेंगे तथा जो भी कार्य अन्य जनों से करवाएंगे उसे अपने समक्ष करवाना पसन्द करेंगे। धनधान्य का आपके पास अभाव नहीं रहेगा तथा हमेशा धन ऐश्वर्य से सम्पूर्ण रहकर जीवन यापन करेंगे।

बुद्धिमान् वित्तसम्पूर्णः स्वकार्यकरणोद्यतः।
अप्रमतोऽप्यविश्वासी नरो मूषक योनिजः।।
मानसागरी

अर्थात मूषक योनि का जातक बुद्धिमान, धनवान, स्वकार्य में तत्पर, गर्वहीन तथा किसी पर भी विश्वास न करने वाला होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति चतुर्थ भाव में होने से माता का शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके प्रति उनका प्रगाढ़ स्नेह रहेगा एवं जीवन में सर्वप्रकार की सुख सुविधाएं तथा अन्य सुखों को वे आपको प्रदान करेंगी। आपके मध्य मतभेद अल्प ही रहेंगे अतः परस्पर संबंध मधुर रहेंगे। साथ ही वाहनादि की प्राप्ति में भी वे आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगी तथा कभी भी कोई कठिनाई का सामना नहीं करने देंगी।

आप भी उनका हमेशा हार्दि सम्मान करेंगे तथा उनकी आज्ञा एवं निर्देशों को मानने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। साथ ही अपने जीवन काल में उनकी श्रद्धापूर्वक सेवा करेंगे तथा आवश्यक सुखसुविधाओं को भी प्रदान करेंगे। इस प्रकार आपके परस्पर संबंध मधुर एवं सुदृढ रहेंगे तथा जीवन को प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत करेंगे।

आपके जन्म काल में सूर्य दशम भाव में स्थित है अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। धनैश्वर्य से वे सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन के अधिकांश महत्वपूर्ण क्षेत्रों में आपकी उन्नति के लिए अपना पूर्ण आर्थिक तथा अन्य

प्रकार से सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही व्यापार तथा आजीविका संबंधी कार्यों में भी उन्हीं की प्रेरणा एवं सहयोग से आप सफलता अर्जित कर सकेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे एवं यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे परन्तु वे शीघ्र ही समाप्त हो जाएंगे। इसके साथ ही आप जीवन में उनको आर्थिक तथा अन्य रूप से पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे तथा सुख दुःख में उनको पूर्ण सहायता तथा सहयोग प्रदान करेंगे।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति दशम भाव में है अतः भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता भी महसूस करेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह विद्यमान रहेगा। धन सम्पत्ति से वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इसके अतिरिक्त सुख दुःख में भी उनसे वांछित सहयोग आपको प्राप्त होता रहेगा। तथा नौकरी या यपार संबंध कार्यों में भी वे आपको सहपोग प्रदान करगै।

आपके हृदय में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह का भाव रहेगा तथा आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी परन्तु कई बार मतभेदों के कारण संबंधों में तनाव भी उत्पन्न होगा परन्तु यह अल्प समय तक रहेगा। इसके साथ ही आप आजीविका संबंधी कार्यों में भी उन्हें सहयोग प्रदान करते रहेंगे एवं सुख दुःख में भी एक दूसरे का सहायता करते रहेंगे।

आपके लिए ज्येष्ठमास, तृतीया, अष्टमी, त्रयोदशी तिथियां, मूल नक्षत्र, धृतियोग, बवकरण, शनिवार प्रथम प्रहर तथा मकराशिस्थ चन्द्रमा अशुभ फलदायक रहेंगे। अतः आप 15 मई से 14 जून के मध्य 3,8,13 तिथियाँ मूल नक्षत्र धृति योग तथा बवकरण में कोई भी शुभकार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृह निर्माण क्रय विक्रय आदि अन्य महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही शनिवार प्रथम प्रहर तथा मकर राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा तथा स्वास्थ्य के प्रति भी सजग रहें।

यदि आपके लिए समय प्रतिकूल चल रहा हो तथा मानसिक उद्विग्नता, शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी प्राप्ति या पदोन्नति में बाधाएं उत्पन्न हो रही हों अथवा अन्य कार्यों में असफलता प्राप्त हो रही हो तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट सूर्य देव की प्रातः काल उपासना करनी चाहिए तथा अर्ध्य भी प्रदान करना चाहिए साथ ही आपको रविवार का उपावास करना भी श्रेष्ठ रहेगा। इसके अतिरिक्त स्वर्ण, ताम्र, गेहूँ, गुड़, घी, रक्त वस्त्र, रक्त पुष्पादि का श्रद्धा पूर्वक दान करने से भी अशुभ फलों में न्यूनता आएगी तथा शुभ फलों में वृद्धि होगी। पूर्ण रूप से शुभ कार्यों में सफलता को प्राप्त करने के लिए आपको रवि के तांत्रीय मंत्र के किसी योग्य विद्वान के द्वारा कम से कम 7 हजार जप सम्पन्न करवाने चाहिए। ऐसा करने से आपकी मानसिक तथा शारीरिक व्याकुलता समाप्त होगी। तथा अन्य स्थानों में लाभमार्ग प्रशस्त होंगे।

ऊँ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं ह्रीं ह्रीं सूर्याय नमः।